Agencia Internacional ISBN
International ISBN Agency

International Standard Numbering System for Books, Software, Mixed Media etc. in Publishing, Distribution and Library Practices

Raja Rammohun Roy National Agency for ISBN,
Government of India,
Ministry of Human Resource Development,
Department of Secondary & Higher Education,
A.2/W.4 Curzon Road Barracks,
Kasturba Gandhi Marg,
New Delhi-110001 (India)
Tel.91-11-23384687
Fax:91-11-23387934
E-mail: isbn@sb.nic.in

International ISBN Agency
Staatsbibliothek zu Berlin,
-PreuBischer – Kulturbsitz
Postsdamer Str.33,
W-1000 Berlin 30
Tel. 00-30-2662378
E-mail: isbn@sbb.spk-berlin.de

F.No. 7525/2007-ISBN **Dated the 20th March, 2007.**

Shashi Kumar Pareek,,
District & Sessions Judge,
Jhunjhunu.

Subject:- Allotment of Single ISBN.

Sir,

Please refer to your letter No. Nil dated 20th March, 2007 relating to registration of publication(s) under ISBN system for the title(s)

ISBN 978-81-7525-843-3
एहसास के दाने

You can print the above-mentioned ISBN on the verso of the title page of the book. In case of paperback, it should appear on the extreme right foot of the outside of back cover. Besides in case of Hard Bound, it should appear on jacket. After final publication, please send a complementary copy of each ISBN title to this Agency.

Please note that a separate ISBN should be assigned to Paperback and Hardbound titles.

Yours sincerely,

Manju
(MRS. MANJU BALA)
ALIO

इण्टरनेशनल ISBN एजेन्सी बर्लिन द्वारा जारी ISBN नं. का प्रमाण–पत्रा

एहसास के दाने

(काव्य संग्रह)

द्वितीय(संशोधित)संस्करण

लेखक :

शशि कुमार पारीक 'परख'

आर.एच.जे.एस.

(जिला एवं सेशन जज)

शशि कुमार पारीक 'परख'

68, करणी विहार, अजमेर रोड़,

जयपुर (राज.)

Mobile : 9414079828

9460514100

9950525215

अबसार अहमद (सदफ) अध्यापक, झुंझुनू का संदेश

शायरी या कविता दिल के जजबात के इजहार या एहसासात को अपने लफ्जो में बयां करने का नाम हैं । पारीक साहब की शायरी दिल के वो जज़बात या एहसासात है जो उन्होंने महसूस किए हैं । उनके ये जज्बात अपने खुद के हैं, किसी किताब या अखबार के नहीं । यानि खुद जो महसूस किया उसका उसी अन्दाज में वगैर किसी लगावत, काँट छाँट या मुलम्मासाजी के। इसलिए ऐसा लगता हैं जैसे कोई मासूम छोटा बच्चा अपनी तोतली जबान में बोलता हो ।

मुखतलिफ फूलों से सजा हुआ बाग बहुत खूबसूरत होता है लेकिन क्या जंगल, पहाड़ दरिया, सितारे, शबनम खूबसूरत नहीं होती जोअपने आप फितरत की गोद में फितरत के और हसीन और दिलकश बनाते हैं। पारीक साहब के शायरीनुमा दिल के ये एहसासात हालांकि इनमें रदीफ, क़ाफिया, वजन बह् नहीं है, लेकिन इन सब के बावजूद बहुत ही दिलकश है ।

मौसम की पहली बारिश और मिट्टी की सौंधी सौंधी खुशबू का एहसास इनकी शायरी में मिलता है ।

—अबसार अहमद (सदफ)
झुंझुनू ।

दीपावली, 2007

अहसासात की फ़सल उगाते एहसास के दाने

(खुरशीद झुन्झुनूवी)

हाल ही में मोहतरम शशि कुमार पारीक साहब, जिला सेशन जज, झुंझुनू की पुस्तक " एहसास के दाने " पढने को मिली, जिसे देखकर खुशी और हैरत भरे अहसास के दाने मेरे दिल की सतेह पर भी चौतरफ बिखर गये । हैरत यह हुई कि अदालती दुनिया की एक उंची मस़रूफ शख्सीयत भी ऐसा साहित्यिक और शाइराना ज़ोको शौक रखती है और खुशी इस बात की थी कि चोटियों पर रहने वाले भी घाटीयों के सैलाब की ख़बर रखते हैं। अगंरचे पुस्तक ज्यादा बड़ी नहीं, फिर भी मज़लूम मानवता और कौमो वतन के दर्द का एक बड़ा समन्दर इस कूजे में समाया नज़र आता है । पूरी पुस्तक गंगा जमनी भाशा और गंगा जमनी तहजीब के रंग में रंगी नज़र आती है। बड़ी साद़गी और सलासत के साथ बिना किसी बनावट और शाइराना फ़नकारी के हिन्दी, उर्दू व राजस्थानी के मिले जुले शब्दों में दास्ताने दर्दे दिल बयान की गई है, जिसे देखकर मरहूम साहिर का यह शेअर याद आता है कि–

दुनिया ने तजरबातो हवादिस की शक्ल में,
जो भी मुझे दिया है वह लौटा रहा हूँ मैं ।

पारीक साहब की शाइरी या कविता सादा होते हुए भी एक बॉकपन रखती है। इनकी कविताओं में जहां गणपति बप्पा मोरिया और बाबा बजरंगी जैसी रचनायें देखने को मिलती है वहॉ सच्ची इबादत और खुदा का ठिकाना जैसी कविताऐं भी पढने में आती हैं। इनके अलावा " हम न थे ऐसे", "भ्रूण हत्या" और " फिरका परस्ती " जैसी कवितायें ऐसी हैं, जिनके जरिये हमारे सियासी, समाजी ज़खमो

आभार प्रदर्शन.....

सर्वश्री विनय सिधंल, मनीष मित्तल, पंकज माथुर व विशाल सुरोलिया ने मनोयोग से अपना निजी समय देकर सहयोग दिया। श्री विमल तुलस्यान व श्री शिवकुमार शर्मा (प्रेस वाला) का शुक्रिया अदा ना करना नाइंसाफी होगा, जिन्होंने अल्प समय में अच्छे कलेवर की पुस्तिका के रूप में इसके प्रकाशन में व्यक्तिगत रूचि ली। मेरे पिता श्री पुष्कर दत्त पुरोहित का आर्शीवाद रहा तथा मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला पारीक व मेरी पुत्रियां श्रीमती मनीशा शर्मा, श्रीमती विनिता व्यास व श्रीमती सुनिता पारीक ने घरेलू जिम्मेदारी से मुक्त रख मुझे इसमें सहयोग दिया। समय समय पर मेरी रचनाऐं प्रकाशित करने व कराने वाले पुस्तक की समीक्षा करने वालों सज्जनों, मित्रागण व परिजनों का भी सहयोग रहा है, उन सबका भी आभार व्यक्त करता हूँ। हौसला अफज़ाई के लिए खुर्शीद साहब, श्री टेकचन्द शर्मा, डॉ0 रामरूवरूप परेश, श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, श्री राकेश कटारा व मोहम्मद तारिक हुसैन का शुक्रिया !

ज़िन्दगी के इस पड़ाव में किताब छपवाने की मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी, किन्तु मुझे मेरा ही एक शेर याद आया–

''सहर के सुनहरे ख़्वाब,
जवानी की दोपहर में पूरे किए,
शाम–ए–ज़िन्दगी ढ़ल रही,
जाऐगें चंद ख़्वाब अधूरे लिए।''

मैं मेरे ख़्वाब अधूरे नहीं रखना चाहता था ।
शुभ कामनाओं सहित।

– शशि कुमार पारीक ' परख'

श्री टेकचन्द शर्मा का संदेश

'एहसास के दाने' किताब !
कह रही है सुनो जनाब ।
इन्सानियत के जो एहसास !
उनका भी देखों कभी हिसाब ।

कवि हृदय श्रीयुत शशि पारीक !
एहसास के दाने, तुम्हें मुबारिक ।
हृदय के भाव कविता में ढ़ाल ।
कर्ज से आप हो गए फारिग ।

कविताओं की दे फुलवारी ।
जिम्मेदारी पाठकों पर डाली ।
सुरभि इसकी फेले चहुँदिश ।
फुलवारी की करें रखवाली ।

बहुत–बहुत देते धन्यवाद ।
करते रहेंगें एहसास को याद ।
चन्द्र शशि तो एक ही शशि ।
चन्द्र दे रहा शशि को दाद ।

– टेकचन्द शर्मा

तमन्ना

मेरे मौला, मेमना सा तशद्दुद नापसंद ना बनाओ,
हर गली का पिद्दा पिल्ला ही, लगे मूंह चाटने।

इतना सब्र–ओ–सुकूं भी किसी के किस काम का,
के अपने ही अज़ीज लगे बात काटने।

ना बनाओ सूरत इन्सानियत के दायरे से उपर,
के हर शैतान पर ही रहमत की बारिश बरसे।

मत बनाओ फरिश्ता शैतान को हो हमारी शिनाख़्त,
फरिश्तें हो बाखबर,हसद से क़त्ल को तरसे।

रहने दो, अभी चंद तमन्ना, हसद–ओ– हवस,
बाकी आरजू–ओ–हसरतें, के दिल रहे बेबस।

ना तो भगवान बने, ना बने शैतान,
रहे इंसान, दिलो दिमाग में रहे क़शमकश ।

हे मेरे मालिक, तेरी नियत पर शक है,
लगता शराफ़त से अब हमें बेहद डर है ।

पहले बुलाते हो अहले बातिन को क्यूं,
जब हम खुद रहते मौत से बेखबर हैं ।

अहले बातिन – ख़ुदा के प्यारे बेटे
तशद्दुद – हिंसा

–अनुक्रमणिका–

क्र.स.	शीर्षक	पृष्ठ
1.	तमन्ना	16
2.	दरम्यानी	17
3.	सच्ची इबादत	18
4.	खुदा का ठिकाना	19
5.	तकबीर बनाम तक़दीर	20
6.	कायदा–ए–खुदगर्जी	21
7.	खुद का अक्स	22
8.	ग़म की वज़ह	23
9.	गम़–व–खुशी	24
10.	ग़म का क्या ग़म	25
11.	हम न थे ऐसे	26
12.	आख़िरी नसीहत	27
13.	फ़िरक़ा–परस्ती	28
14.	ज़वाबदेही	29
15.	आदमी का क़द	30
16.	हम से सब अच्छे	31
17.	हसरतें	32
18.	इन्सान	33
19	रे बेईमान चोर	33
20.	खुशाम़दख़ोरी	34
21	भ्रूण – हत्या	35
22.	ख़ामियाज़ा	36
23	बादल क्यूं ना बरसते?	37
24.	पथराया चेहरा	38
25.	मख़मूर	39
26.	रिश्ता	39
27.	धूम्रपान	40
28.	बेग़र्ज़ रिश्ता	41
29.	मददगार	41
30.	राज़–ए–कामियाबी	42
31.	कामियाबी	43
32.	निशाने मोहब्बत	44
33.	ग़मे हिज़	45
34.	धोबी की तलाश	46
35.	अहसासे मुहब्बत	47
36.	दिल का सौदा	48

–दरम्य़ानी–

ना कोई भगवान है, ना कोई शैतान है,
हम तो सब इन्सान हैं, दरम्य़ानी !

ग़म सतही हो तो रोएं, बेहद हो तो बे़जाना !
जब हदें पार कर दे तो हंसने लगे दीवाना,

ख़ुशी हद में रहे तो आए मुस्कुराना,
हदें ख़ुशी की पार तो रोने लगे दीवाना,

इज़्ज़त हो या ईमान, आवाज़ हो या रोशनी,
ताक़त हो या दौलत बर्दाश्त करें, केवल दरम्य़ानी!

हम इन्सान हैं क़द व एहसास के, दरम्य़ानी,
हमारी चाहत ज़रूरतें होनी चाहिए, दरम्य़ानी!

रंजो–ग़म, मौजो–मस्ती, ख़ुदग़र्जी या कुर्बानी
'परख' हदें बांधनी होगी दोनों छोर, दरम्य़ानी!

एहसास दर्द–ओ–ख़ुशी का बर्दाश्त होता दरम्य़ानी,
मेरे मौला! कुछ भी दें, पर देना केवल दरम्य़ानी !

तदबी़र बनाम तक़दीर

मुफ़लिसी ने नाम रखा उसका " फकीरा",
रही दौलत की दिल में नामुकम्मिल प्यास ।
औलाद को नाम दिया " अश़रफ़ी "
किस्मत में थी इल्मो हूनर ख़ास ।

थोपी तिज़ारत ना आई उसे रास,
खोया हूनर, रहा नाकामयाब ।
तकदीर में बदा कुछ और हो,
नाहक थोप देते हो अपने ख़्वाब!

खुदा की खुदाई में ना कर दख़ल,
जीने दो उसे, ज़िन्दगी लाज़वाब ।
तदबी़र से बदल सकते तकदी़र तुम,
फिर इन्सान नहीं, खुद खुदा होते जनाब!

क्यूं अपने अरमाऩ औरों पर देते थोप,
नरगि़सी रौं को बहने दो, मत रोक ।।

कायदा–ए–खुदगर्ज़ी

नाकामयाब नहीं होते है वो, जो चालबाज़ नहीं है।
खुदगर्ज़ी कभी किसी क़ायदे की मोहताज़ नहीं है।
नाशुक्रों के पास एहसानों का हिसाब आज नहीं है।
वो जानते नहीं खुदा की लाठी में आवाज नहीं है।

इंसान के हालात बदलते तो अहसास बदलते हैं।
रिश्ता–ए–वफ़ा ही क्या, इंसान बदलते रंग है।
इंसानी नीयत, कद, हरकतें होती तंग हैं,
लिबास पर मत जाओ, इनके दिल भी तंग है।

'परख' शराफ़त शरीफ़ों की समाअ़त होती है।
रूह–फ़रोशी हो पेशा, उनका क्या कसूर है ?
फ़ितरते हो गई आज़ाद, उन्हें क्या रंज़ो–अलम हैं,
बहरे – दौलत बागर्ज़, बदलते देखो आइन–ए–दस्तूर है।

नोट – फितरत – प्रकृति
बहरे – दौलत – धन के लिए
आइन–ए–दस्तूर – कानून व रस्म़
समाअत – अधिकार क्षेत्रा
रंजो–अलम – दुख–दर्द

गम़–व–खुशी

कोई ग़म उसे क्या ग़म दे पाएगा,
जिसकी रूह का अंधेरा उसी का हो,

आ गया जो तन्हा ज़िन्दगी से आज़िज,
हर वक़्त मिजाज़, नाखुशी का हो !

कोई खुशी उसे, क्या इज़ाफ़ा कर पायेगी,
ज़िस्म का रेशा–रेशा, "खुशी" का हो !

हाफ़िज ज़रूरतमंदों का, कुदरत से प्यार,
ग़ैर नहीं, खुदा भी अपना उसी का हो !

–फ़िरक़ा–परस्ती–

हुकूमत वतन की करने हासिल,

इस ज़म्हूरियत में,

ज़ात, मज़हब के कुनबों में,

अवाम सारी बंट गई ।

ठगे रह गये शरीफ़ लोग,

सियासती रगड़े में,

वतन–परस्ती की थी मज़बूत इमारत,

बुनियाद संग फट गई ।

ग़म का क्या ग़म ?

जो तुम उठा सको किसी का ग़म,

बोझ होगा अपने दिल से कम,

खुशी तो है बुलबुला–ए–आब़,

ग़म हर पल, संग देता जनाब !

ग़म पर ग़म कभी ठहरता नहीं,

ग़म कभी आहिस्ता से गुजरता नहीं ।

"खुशी" होती मेहमान चंद रोज की,

ग़म का आशियां यूं जिन्दगी से जाता नहीं ।

खुशी से तो कभी कोई मरता नहीं,

'परख' ग़म ग़म में ही समाता है।

–ज़वाबदेही–

बेज़ुबां मक़तूलों की सियासी मौतों का,

बहा बेगुनाह ख़ून हर ओर, जम गया सुर्ख रंग,

क़त्ले आम था बेमक़सद, नफ़रत इंसानियत से,

क्यूं फ़रेबी नाम रखा – "अमन के लिये जंग"?

हश्र के दिन तानाशाह हुक्मरान देंगे आम कैफ़ियत,

जुदा देने होंगे हर क़ातिल के क़त्ल के हिसाब ।

यतीम बच्चों की मासूम निगाहें देगी जब गवाही,

करेगी हमारी नस्ल गुनाह क़बूल, होंगे शर्मसार लाज़वाब !

–हसरतें–

इंसानी ज़रूरतों का क्या,

क़िस्म और नफ़री होती

कुकुरमुत्तों सी अनेक व न्यारी ।

शैतानी हवस का क्या

रफ़तार व वज़न होते,

शुतुरमुर्ग सी तेज व भारी ।

बेक़ाबू हसरतें कांटो सी इतनी की,

मर्ज़ बढ़ा, ज्यों ज्यों लिया इलाज ।

इन्हें उखाड़ फेंको जड़ों से,

बस यही बेख़र्च पक्का इलाज।

ख़ामियाज़ा

हज़ारों मन्नतें मांगी, जिनको पाने की चाह में,
समझते हैं, हमें आज दख़ल, दौलत की राह में।

चलना सिखाया कभी, अगुंली पकड़ वालिद की तरह,
चल दिये करके हिसाब, हमसे सूदख़ोर की तरह।

हिफ़ाज़त की बनके फानूस, जिस शमा की,
दे दी सुपारी मेरे क़त्ल की, ख़ूंख़ार की तरह।

जिन्हें तालिम दी दीन–व–दुनिया की मौलवी की तरह,
खड़े है उसी के इज़लास में गुनाहग़ार की तरह।

जिन्हें अज़ीज़ समझा था, हमने ज़िंदगी की तरह,
कर गये हमें शर्मसार, जानी दुश्मनों की तरह।

इंसान की क्या हस्ती है, वक़्त ही है ताकतवर,
इंसान से तो ना सही, कुछ तो ख़ुदा से डरा कर।

ऐ मेरे मौला ! बस कर, और बुरा वक़्त ना दिखा,
वर्ना हम भी बेच आयेंगे, ईमान काफ़िर की तरह।

–इन्सान–

ख़ुदा ख़ुद पर हैरान है,
देखकर बनाया अपना जहॉ
इंसान को बनाया ख़ास मुखतार
जाना था कहॉं–पहुँचा कहॉं !

–रे बेईमान चोर–

रे बेईमान चोर,
चुरा ले सब कुछ,
किसी ईमानवाले का
ईमान ना चुराना,
वो तेरे तो काम ना आएगा,
दुनिया में एक बेईमान
और बढ़ जावेगा,
नाम तुम्हारा आएगा !

धूम्रपान

हंसता है तू, तो बिखरते हैं
फ़िज़ां में चमन के फूल,
छोड़ता है तू धूआं, मासूमों के
फेफड़ो में चुभते हैं शूल !

तम्बाकू जलाते हो तो, फैलता है,
ख़ुशनुमा फ़िज़ां में धुआं जहरीला,
मासूम मां–बच्चों के फेफड़े,
इस सज़ा की किससे करें गिला ?

तुझे फिर भी चिलम पीनी है तो पी,
यह है तेरा निजी फ़ैसला,
पर हक़ क्या है तुझे बिख़ेरने का,
आम जगह पर धूआं विषैला ?

क्या मज़ा देती है सुर्ख़ी,
लबों पे तेरे मुस्कान की,
क़सम है तुझे तेरे ईमान की,
छोड़ दें तू आदत धूम्रपान की।

बादल क्यूं ना बरसते ?

प्यासी–सूखी, तपती धरती ने कहा,
घुमड़ती इतराती काली घटाओं से –
"क्यूं मैल छुपा तुम्हारे अंदर,
क्यों बरसती हो समन्दर पर ?"

बादलों ने यूं कहा –
"क्या करूं बरस कर
खेत आबादी, झील में,
समन्दर इज्ज़त देता,
समा लेता है अपने दिल में।

आसमान का हूक्म़ है –
गलती ना करना,
कभी ख़्वाबों या ख़्यालों में,
मत बरसो वहां, जो बेक़द्री से तुम्हें
बहने देते है, गन्दे नालों में !"

निशाने मोहब्बत

इक शहंशाह की बेपनाह मोहब्बत की निशानी थी,

ताज कोई मकबरा नहीं, उसकी बेइन्तहा, दीवानगी थी ।

इन्सां या इन्सानियत से कोई ना था उसे मतलब,

कारनामे अंज़ाम दिए, तमाम ज़िन्दगी दरिदंगी तलब ।

दौलत का सहारा लेकर यादगार बनायी कब्रगाह,

भूल गया वो कि मकबरा नहीं बन सकता इबादतगाह ।

मकबरा होता महज़ मकबरा, खंजर होते खंजर,

हीरे जड़े सोने के खंजर, नहीं जाते दिल के अंदर ।

तुम किसी से मोहब्बत करो, तो इज़हार ना करो,

दौलत से तौलकर किसी के, ज़ज्बात शर्मसार ना करो ।

मोहब्बत एक पाक ज़ज्बा, उसे महज़ महसूस करो,

ज़िस्म होगा कल सुपुर्दे खाक, रूह से इसे महफूज करो ।

बेग़र्ज़ रिश्ता–

मोहब्बत भी हमराह से,
नफ़रत भी हमसफ़र से,
काश होता, कोई दरम्यानी सा
रिश्ता दर्द का, रहगुज़र से !

मददगार–

दुआ है कि खुशियों से सजे ज़िन्दगी आपकी,

बस खुदा को पुकार लेना, अगर कोई साथ ना हो,

वो करा सकता है इन्तज़ार, वक़्त कोई पास ना हो,

आज़माना फिर हमें जब खुदा भी साथ ना हो ।

ग़मे हिज्र

हर शख़्स गुजरता है, ज़िन्दगी के उस मुकाम से,
मोहब्बत सी हो जाती है, उसे जुदाई के नाम से ।

लगता है ज़िन्दगी इक हसीं ख्वाब है,
फिर ख़्वाब तो लगते ही बेहद लाज़वाब है ।

ज़िस्मानी फ़ासले होने से महज़ दिल दूर नहीं होते है,
दूर वो कभी नहीं होते, जो मज़बूर नहीं होते है ।

क्यूं उठकर तुम चले गये, हमारी महफ़िल से?
क्यूं आखिर निकाल ना पाए, हमें दिल से ?

क्यूं उदास दिल घबराता है, तन्हा लम्हों में ?
गमे–हिज्र बढ़ाती है, मक़तूल की चाहत क़ातिल से ।

नोट – ग़मे–हिज्र – जुदाई का गम
मक़तूल – जिसका कत्ल हो

दिल का सौदा

खूबसूरत ख्वाबों की नन्हीं सी तन्हा जन्नत मेरी,
क्यूं आग तूने लगाई, दिल की मन्नत मेरी,
बिला बदल का दिलफ़रोशी का था, सौदा मेरा !
क्यूं नामुकम्मिल रहा, घाटे के ठेके का मसौदा मेरा,
खूबसूरत ज़िस्म दिया, पर दिया नहीं दिल उसे,
दिल से किया दिल का सौदा, क्यूं दिमाग ने तौला उसे !

नाराज़गी

तुमने कभी 'परख' को,
मूंह भी न लगाया, हमसफ़र !
लगता था, तुम रहीम हो,
कलेजे से लगाओगे, दिलबर !
रूठे महज़ इसलिए कि
आकर तुम्हें मनाए कोई,
होता पास्बान में अगर दिल,
काश ! हमें दिखाए कोई !

नज़र

नज़र नज़र में नज़र का ही फर्क होता बहोत है,
कोई नज़रों में चढ़ता है तो कोई गिरता बहोत है ।

नज़रों से जो गिर गये, वे क्यूं नज़र नहीं आते?
नज़रों में चढ़ जावें तो क्यूं नज़रों से नहीं जाते ?

नज़र से नज़र में जब डाल दिया, मोहब्बत का पैग़ाम,
नज़रों ने क्यूं नज़र कर दी, नफ़रत का नज़राना तमाम !

नज़र बचाकर ख़िसक लेते, जब होते नज़रअंदाज़,
क्यों हंगामा बरपा करता, उनका नज़र ना आना ?

मेरी चाहत को चाहने वाली की बुरी नज़र ना लगे, ऐ खुदा !
नज़र आ जाती है किसी का तिरछी नज़र से देखना जुदा !

नज़रों से नज़र मिली, रोज के आने जाने में,
नज़र कर दिया तब दिल, मोहब्बत के नज़राने में।

पहले कभी थे आप 'नज़ीर', शरीफों की मेहफिल में,
क़द इस कदर बढ़ाया 'परख', आप 'बेनज़ीर' हो गए !

नज़र की है नज़्म, खुर्शीद झुन्झुनूवी को नज़राना,
पाक व रहमत की नज़रें जिनकी, सादगी का खज़ाना !

–चाहत अपनी अपनी–

किसी और को चाहो
यह हक़ है तुम्हें,
किसी ग़ैर को अपनाओ
यह हक़ है तुम्हें,
मेरी चाहत पर कोई बंदिश
नहीं हो सकती,
मैं तुम्हें दिल से चाहूँ
यह हक़ है मुझे ।

मेरी चाहत, तुम्हारी चाहत की
नहीं है मोहताज,
तुम्हारी चाहत इकतरफा
नहीं कोई एतराज़,
चाहतों में फ़र्क़ नहीं जानती,
तुम्हारी है वो नादानी,
जान लो इस फ़र्क़ को
तो समझोगी चाहत हमारी ।

सालगिरह का तोहफा

सालगिरह पर शायर ग़ालिब !
तुम्हें देते हैं एक नायाब तोहफ़ा,
हम हटते तुम्हारे मुक़ाबले से
नाहक़ होते हो ख़फ़ा !
बताओ तुम ही ग़ालिब !
क्या मुक़ाबला हो तुमसे,
हम है जवां साठ के,
तुम बुज़ुर्ग हो दो सौ दस के !

तुम ही थे शायर हमारे मुक़ाबले के,
था ग़ज़ब का हूनर,
शेर तो लिखते थे लाज़वाब
पर क़िस्मत के भी सिकंदर,
दुनिया को बता गये श़ेर,
लिखते पढ़ते हैं किस क़दर,
तुम्हें तो मिल गये क़द्रदान,
हम पढ़ते गली कूचे के अंदर ।

'परख' चाहता है काश! ग़ालिब
आज मेरे लिये ज़िंदा रहते,
हम शायर है किस वज़न के,
गवाही दुनिया को तुम्हीं देते।।

–चाहत हमारी–

ज़िन्दगी तमाम हुई तमन्ना चुनते,
यक़ीन फिर भी बाक़ी है तेरी वफ़ामें,

उम्मीदों के सहारे ही, गुज़री ज़िंदगी,
कभी नाउम्मीद ना हुए तेरी जुदाई में,

चाहत हुई गहरी, रंग दिया मोहब्बत,
फिर मोहब्बत हो गई तेरी इबादत ।

इबादत से बढकर चाहत क्या होती ?
ये गहरा राज़, जो बस ख़ुदा जाने !

सच्ची चाहत और चाहने वालों की,
सुना नहीं, कभी कोई उम्र होती है !

बढ जाती है चाहत बेतहाशा, पास आने से,
ना धटती है ना मिटती है, दूर हो जाने से ।

ख़ाक होता है इंसान का बदन, वक्त आने से,
रूह से कायम रहे रिश्ता, वक़्त के ठहर जाने से।

प्यारी बेटियां

सजा नहीं सपना, होती हैं बेटियां !
सुख की सुबह हो या गम की शाम,
वक्त जरूरत आती है काम,
आंखें बंद कर एहसास करो,
आसपास ही, होती हैं बेटियां !

मां–बाप की दुलारी, पिया की प्यारी,
चंद दिनों में बेगानी, अमानत होती हैं, बेटियां !
नूर से इनके रोशन है,
दो घरों का कोना–कोना,
चाँद से भी ज्यादा नूरानी, होती हैं बेटियां !

कल सुनती थी कहानी,
पलभर में हो गई सयानी,
सभी की आंखों का पानी,
प्यार की जीती जागती,
कहानी होती हैं, बेटियां !

दोस्ती–दुश्मनी

कुर्बानी का जज़्बा था कभी,
अब दोस्ती महज़ रस्म़ हो गई।

कभी दिली मोहब्बत थी वो अब,
दिल पे क्यूं हसद–ओ–सितम हो गई ?

रहते पड़ोस में, दीदार नसीब़ नहीं अब,
पहले नूरे–चश़्म, अब बेचश़्म हो गई,

हमप्याला हमनिवाला जिंदग़ी थी कभी,
शनाख़्त भी ना बची, भस्म हो गई ।

नसीब वालों को मिलती थी कभी दोस्ती,
मिसाल थी कभी–अब तो तिलिस्म हो गई,

'परख' खाई थी साथ जीने मरने की क़सम,
नफ़रत उन्हीं की, दोस्ती की ख़सम हो गई !

नोट : ख़सम– दुश्मन,
हसद –ईर्श्या
भस्म –राख
तिलस्म– जादूई

तरक्क़ी

कहाँ गए गुज़रे ज़माने के वे लोग,
करके एहसान, ना याद वे रखें,

कहाँ से आए, ये गये गुज़रे लोग,
कराके एहसान, ना याद वे रखें।

तरक्क़ी ने बदला ज़माना ये कैसा?
अपने ही चमन में फ़साद वे रखें,

उजाड़े उसी बस्ती को जहाँ बसर हो,
गुल–गुलशन को अपने बरबाद वे रखें।

–पेंशन स्कीम–

चालीस लम्बे साल ख़िदमत की सरकार की,
जब रिटायर कर दिये तो क़ानूनन पेंशन हो गई।
करने को कुछ रहा नहीं, वेतन रह गया आधा,
अपने घर में अजनबी आया तो टेंशन हो गई।
पेंशन के ही भारी बजट से सरकारें हुई ख़स्ता हाल,
प्रोविडेन्ट फण्ड की अदायगी अब फैशन हो गई।
फण्ड ने किया घर में अफण्ड, अकेले को हज़म ना हुई,
औलादों में बंटनी थी, बंट गई, फ्रेक्शन हो गई।
अब तो बोली लगती मेहनताना की कैम्पस में ही,
दहेज के साथ, वेतन पैकेज भी हैसियत इण्डिकेशन हो गई।
किसे सब्र है परख, सालों साल मेहनत और ख़िदमत की,
"ईजी मनी, ईजी वे" यही अब तो कोटेशन हो गई,

कौन पडे झंझट में, इन प्रोविडेंट और पेंशन के ओप्शन में,
तगड़ा झटका मारा पहले ओवर में, वन टाइम पेंशन हो गई।

दौड़

जिंदगी की रफ्तार के साथ, दौड़ के करना क्या हैं,
अगर यही है जिंदगी जीना, तो फिर मरना क्या है?

क़तरा क़तरा जिन्दगी अबस तमाम होती है,
उम्र हो जाती है जईफ़ तो, जी कर करना क्या है?

बालू रेत में नंगे पांव अब टहलते क्यूं नहीं हो,
भूल गए, भीगे बदन बेख़बर टहलना क्या है ?

डूबते आफ़ताब को कब देखा था, शायद याद नहीं है !
रूबरू नज़रें, शाम का आहिस्ते से फिसलना क्या है?

''परख'' चंद लम्हें नरगिसी नज़रों के साथ,
जान लें, लम्हा लम्हा ज़िदंगी रंगना क्या है ?

शहर की रफ्तार के साथ दौड़ के करना क्या है,
दोस्तों, यही है ज़िन्दगी, तो फिर मरना क्या है ?

दाग

ये दाग़ चेचक के हर्गिज़ नहीं है, 'परख' !
हसद से देखा है गड़ाकर नज़रें अब रोता क्यूं है ?
निशानी ये गद्दारी दोस्त की है, जाती नहीं है,
दाग़े–यकीन गहरे हैं, अबस धोता क्यूं है ?

दोस्ती दो दिलों को निभाने का सौदा है,
हसीं फुलछड़ी छोड़ी है, डोडा–पटाखा नहीं हैं।
दोस्ती होती है, मिसाले कुर्बानी ओ वफ़ा,
दोस्त दोस्त होते हैं, किसी के आक़ा नहीं है।

नोट–

हसद– ईर्ष्या

अबस –व्यर्थ

दोस्त बेईमां

तेरा अख़लाक व ईमान इतना ऊचां नहीं 'परख',
तू हो सके श़रीके–दोस्त उनकी मेहफ़िल में।

तूने आखिर क्या गद्दारी की अपने दिलबर से,
शामिल कर लिया तुम्हें शरीके फर्दे–क़ातिल में।

दोस्ती क्या ईमान देख की जाती है, बेखब़र !
ईमान तेरा होगा बेमिस्ल इस्तिशना, जहॉपनाह !

तोड़ेगा दोस्ती–रिश्ते इस बुनियाद व पैमाने से,
हमें डर है, रहा जाएगा ज़िन्दगी में महज़ तन्हा ।

तुझे ये कैसी खुशफ़हमी तू है खुदा का मुखतार,
तुझे अगि़यार की क्या जरूरत, काफी है तेरा यार।

किस लिए ढुढ़ता है लोगों में ख़ामियां खुर्दबीन से,
हक है तुझे झांकने का अपना गिरेबां आर–पार।।

लापता

खुद मुखतार बने रहने, कहते हैं मिलते नहीं है,

दरअसल तुम्हें ढुढ़ने का, वक़्त किसी को नहीं है।

तुम्हारे मुलाक़ात के वक़्त पर, कोई तुम्हें मिलता नहीं है,

तुम्हें ढुढ़ने की जगह पर, कोई तुम्हें ढुढ़ता नहीं है।

ये ग़लत कहा तुमने, मालूम उसका पता नहीं है,

उसे ढुँढ़ने की हद तक, कोई उसे ढुँढ़ता नहीं है।

जब तलक रंजो–अलम ना हो, किसी को जरूरत नहीं है,

फिर वक़्त पड़ने पर, उस के पास भी वक़्त नहीं है।

माँ के नाम

महीना भादवा का था, तब आया करवां चौथ,
खुदा के शुक्र से, खाली ना थी उसकी कोख़।
नज़र ना आया आस्मां में शर्मिला चांद उसे,
खोला तब रोजा, 'शशि' देख अपनी गोद।

तराजूवाला इंसाफ

तख़्ते–ताऊस ऊंचा तशरीफ रखने,
ढ़ीले उसके कीरें हैं।
किसकी बनाई हुई ये अजायब,
तराजूवालों की तस्वीरें हैं।

ज़िल्द की कीमत है इज़लासे–खास में,
किताब की कोई नहीं है।
ताज तो रखा है सिर पर मगर,
बाँध रखी मज़बूरी की ज़ंजीरें हैं।

जाएं किधर है

बताँए कोई हमें हम जांए इधर है,
के हम आज जांए उधर है ।
बड़ी मुश्क़िल है आज यारों,
बताँए कोई हमें, हम जांए किधर है।

हुस्न ने अभी तो रूखसर से पर्दा,
हटाया नहीं, देखी तस्वीरे रूखसर है ।
जाने वो कैसी बैठी दिलबर है,
रूबरू जो हमारी मंगेतर है ।
आज क्या होगा, कैसी रहबर है,
क्या हमारा मकलूब मुकद्दर है ।
बड़ी मुश्क़िल है आज यारों,
बताँए कोई हमें, हम जांए किधर है।1।

बताँए कोई हमें हम जांए इधर है, के हम आज जांए उधर है ।
बड़ी मुश्क़िल है आज यारों,बताँए कोई हमें, हम जांए किधर है।

एक नाता पेश़्तर मुहब्बत का है,
दूसरा आज किया है हालातो तक़दीर ने ।
दोनों में आज होनी टक्कर है,
देखे कौन इन में सिकंदर है ।
बाजार में यह ग़रम ख़बर है,
यह लाज़िम है के ढहेगा क़हर है ।
बड़ी मुश्क़िल है आज यारों,
बताँए कोई हमें, हम जांए किधर है।2।

बताँए कोई हमें हम जांए इधर है, के हम आज जांए उधर है ।
बड़ी मुश्क़िल है आज यारों,बताँए कोई हमें, हम जांए किधर है।

जुनूं से खाली हो गए ज़ेबों–दामां,
नफ़स का तार है सीना ओ गिरेबां में।
होते हैं बेदम–मुफ़लिस तेरे आशिक़,
तू दिल पर तीरे–नज़र चलाना छोड़ दें।

रहा कर चिलमन की ओट, नक़ाब हटाना छोड़ दें।
मर जायेंगे कमज़ोर दिल, तू मुसकुराना छोड़ दें।।3।।

मार डालता है, दीवाने को तेरा तसुव्वुर,
टूटा दिल महसूस करें, बिजली सी तेरी मुस्कान को।
नाक़ाम आशिक डरते हैं, हुस्न से,
बेदम पर अब बिजली गिराना छोड़ दें।

रहा कर चिलमन की ओट, नक़ाब हटाना छोड़ दें।
मर जाएगे कमज़ोर दिल, तू मुसकुराना छोड़ दे।।4।।

हसद से हुए दाग़, मेरे जिग़रे सोज़ा में,
मिलती ना कभी खोज, ाम़ा में किसी परवाने की।
के लगती है आग पानी में, साये से तेरे गुलबदन,
के तू बेगानी नज़रों से, बेपर्दा नहाना छोड़ दें।

दिल थाम के बैठे ऐसे हमसफ़र है,
हाल ना पूछो हमारे बदतर है ।
यकीनन मर्जी से पी रहे ये ज़हर है,
बेताब है दिल, जाने कैसी रहगुज़र है ।
गुजरेगी क्या नादाने दिल पे है,
देखेंगे जब तुम्हारा रूखसर है।
बड़ी मुश्किल है आज यारों,
बताँए कोई हमें, हम जांए किधर है।3।
बताँए कोई हमें हम जांए इधर है, के हम आज जांए उधर है ।
बड़ी मुश्किल है आज यारों,बताँए कोई हमें, हम जांए किधर है।

खामोश बैठे हैं, यार है या अग़ियार है,
धडकनें बुत की है जो बेसब्र है ।
माशूक की तक़दीर जब़र है,
या जो सामने बैठी कलंदर है ।
कयाम़त अभी तक है बापर्दा,
और हम खुदक़शी के मुतंज़र है ।
बड़ी मुश्किल है आज यारों,
बताँए कोई हमें, हम जांए किधर है।4।
बताँए कोई हमें हम जांए इधर है, के हम आज जांए उधर है ।
बड़ी मुश्किल है आज यारों,बताँए कोई हमें, हम जांए किधर है।

वक्त पूरा हुआ जा रहा है,
कमजोर क्यूं हमारा जिग़र है ।
आहस्ता, आहिस्ता रूख से हटाया,
रूख पे जो नक़ाबे पहर है ।
सामने दिलबर की हमशक़्ल नज़र है,
जो मयस्स़र है, मौला का शुक्र है।
बड़ी मुश्किल है आज यारों,
बताँए कोई हमें, हम जांए किधर है।5।
बताँए कोई हमें हम जांए इधर है, के हम आज जांए उधर है ।
बड़ी मुश्किल है आज यारों,बताँए कोई हमें, हम जांए किधर है।

तेरे गेसू

तेरे गेसूं काली घटाएं,

जो हमने संवारे होते !

और ही रूप लिए क़ायनात में,

यें चांद सितारें होते !

तेरे आंसू चमकते मोती,

दिल में पिरोए होते!

नूरानी तेरी आँखों में

ठहर झिलमिलाए होते!

मुन्तशर तेरी गेसू को,

काश, हमने संवारे होते!

दग़ा ना करती जो किस्मत यूं

आज तुम भी हमारे होते!

रहमत उसकी रज़ा, मौला की,

दीदारें हुस्न यूं ना कराए होते!

दीवानग़ी में तेरी तस्वीर के संग,

'परख' यूं ना बौराए होते!

नोट– मुन्तशर :– बिखरी

रहा कर चिलमन की ओट, नक़ाब हटाना छोड़ दें।

मर जायेंगे कमजोर दिल, तू मुसकुराना छोड़ दें।।5।।

क्या मज़ा–ए–नशा देती है, मयकशों को,

दो फांक लबों पर सुर्ख़ी तेरे पान की।

के बेवफा बिन पिए मरते हैं मख़मूर,

बेनक़ाब हो तू, पान खाना छोड़ दें।।

रहा कर चिलमन की ओट, नक़ाब हटाना छोड़ दें।

मर जायेंगे कमजोर दिल, तू मुसकुराना छोड़ दें।।6।।

मोहल्ला हसीनों का हो, मौजूद मजनूं बेशूमार,

जानते हैं दिलफेंक, होनी फ़ज़ीहत खानदान की।

बद अच्छा, बदनाम बुरा, तेरी गली आना–जाना,

अज़ांम से बेफिक्र यार, क्यूं तेरी गली आना छोड़ दें।।

रहा कर चिलमन की ओट, नकाब हटाना छोड़ दें।

मर जायेंगे कमज़ोर दिल, तू मुसकुराना छोड़ दें।।7।।

यादें

जब ज़ख़्म भर आते हैं,
याद तुम्हें कर आते हैं ।

कोई सूरत नज़र आती है,
गली में तेरी गुज़र जाते हैं ।
दर्दे–दिल जब सब्ज होता है,
आँखों में आंसू भर आते हैं ।

जब ज़ख़्म भर आते हैं,
याद तुम्हें कर आते हैं ।
जब दीवाना दिल चटक जाता है,
कभी हंसना कभी रोना आता है ।
जब बुलबुल से कोई गुल बिछड़ जाता है,
गुलशन में सन्नाटा छा जाता है ।

जब ज़ख़्म भर आते हैं,
याद तुम्हें कर आते हैं ।

गीत तुम्हारे गाते हैं,
फिज़ा में साज़ बिखर जाते हैं ।
तस्वीर तेरी नज़र आती है,
दिल में सितारे उभर आते हैं ।

जब ज़ख़्म भर आते हैं,
याद तुम्हें कर आते हैं ।

खालिक से जुदा

खुदा की खुदाई का राज, जान लो गहरा बहोत है,
हर शै तोड़ती इसां की फितरत, अंजाम बुरा बहोत है।

गुल को तोड़कर गुलदस्ते में नाहक क्यूं दिया सजा,
गुल है बेखबर, उसे किस गुनाह की दी गई सज़ा।

गुलशन में बुलबुल के चहकने से, बयार के महकने से,
शगुफ्ता था गुल, नावाकिफ रहा क्या है माली की रज़ा।

काश गुलस्ता नवाज समझ पाता किसी गुल के अहसास,
मुन्तशर तो सब हैं बागवां ने क्यूं दी गुल को क़िसास ?

मुरझा जाता है गुल, हीरे से जड़ हो सोने का गुलदान,
गुल तो गुल है, खालिक से जुदा बर्गे–जहर हो जाता घास।

मायनेः–
शै– चीज
ज़हरे बर्ग – विषैला पत्ते
मुन्तशर – बिखरनेवाले, बिखरे हुए
शगुफ्ता – प्रफुल्ल, प्रफुल्लित
क़िसास – सजा–ए–मौत
गुलिस्तां नवाज– माली
ख़ालिक – मूल, जड

क़त्ले–खास

हुआ है ुबाह–ए क़त्ल
कोई गवाह मिले,
है कहॉ मक़तूल,
कोई क़त्लगाह, कब्रगाह मिले।
चुभें पत्थर दिल में
ऐसी पैनी निगाह मिले,
किसने किया है क़त्ल
कोई थाह मिले ।।1।।
हुआ है शुबाह–ए क़त्ल
कोई गवाह मिले,
फ़िदा हो मर मिटे
कोई ऐसी चाह मिले,
मौत का गम करें कौन
कोई आह मिले।
बचा दें क़ातिल नज़रों से
कोई पनाह मिले,
तलाशती क़ातिल आंखे,
कोई राह मिले ।।2।।
हुआ है शुबाह–ए क़त्ल
कोई गवाह मिले,
बदक़िस्मती इश्क की
हुस्न से ख़्वामख़्वाह मिले,
खुदा बचाएं जालिमों से
कोई ईबादतगाह मिले।
गिरते को जो थाम लें
ऐसी रहम बांह मिले,
इब्तदाई गुनाह से बचने की
काश, खूबसूरत सलाह मिले ।।3।।
हुआ है शुबाह–ए क़त्ल
कोई गवाह मिले।

शहीद

उम्रे रफ्ता तूने इंसान – ईमान,
या वतन के लिए कमाया क्या ?
सगे दुनियां में खाया–पिया, सोया,
कब्र में महज़ अपना पा लटकाया।
कर ली मौज़ो–सैर मुल्के फ़ना की,
इंसान की सूरत में पैदा, सीरत ना पाई।
तेरे हमपाया, हमवतन को देख जरा,
वतन के लिए जवां ने जान दे सीरत कमाई।
हिन्द में पैदा हुआ तो हके–वतन अदा किया,
जो मुरदें थे हमवतन, उनमें ज़ज़्बा पैदा किया।
ज़िन्दगी का मकसद दौलत की ज़या नहीं है,
वतन खातिर दुश्मनों से सरों का सौदा किया।
तुम समझते हो फ़लक में ये सितारें हैं,
वे रूहे–शहीद हिन्द के हैं, झिलमिलाते हैं।
अपनी लहद में काश, वे रह पाते,
तो फिर निकल बाहर, सौ को ठिकाने लगाते।
ाहीदे–वतन, तू रहनुमा है हमारा,
सिर नवाता हैं, आज तुझे हिन्द सारा।

बकरा

मौत नहीं, उस का पैग़ाम हमारे नाम आया है,
लगता नहीं दिल खुदा का, लबों पे नाम आया है।1।

क़तार में खड़े नेक़ इंसान, आलिये मुंतज़िर थे,
लब पे उन के बस हमारा नाम आया है ।2।

हसद से जलने वालों, तुम्हारे हिस्से यास,
हमारे हिस्से ाादमां सरे–आम आया है।3।

तदबीर सब करते हैं, तक़दीर सवांरती है,
उड़े साथ, किसी के गिरना, किसी के लबे–बाम आया है।4।

ज़िन्दा थे, पास थे, तुमने क़द्र ना की बेक़द्रदानों,
ख़्वामख़्वाह तस्वीर टांगते हो, जब हमे आराम आया है।5।

फ़ेहरिस्त–कुर्बानी में दर्ज हुआ–बकरीद पर नाम मुस्लमान का,
नाम रोशन करने उसका, वो गरीब बकरा काम आया है।6।

जान से बकरा गया, मियां को फिर भी मजा नहीं आया,
गोश्त तो खा गया, गर्दन टेढ़ी कटने का इल्ज़ाम आया है।7।

इस दीवाली पर

दौलत है पराई अमानत, उसकी तू हसरत ना किया कर,
बे–आबरू, बांदी है वो बेईमान अमीरों की, इबादत ना कर ।
सच्चे ईमान मुफ़लिसो की कब हुई वो, सच्चाई हैं बेबाक,
समझ नहीं आई फिर भी तुझे, सजदा कर उड़ाता है अपना मजाक ।।

मजबूरी ले जाती जश्ने शादी में, तो जवान बेवा करती है सिंगार,
देखा कभी तुने झांककर दिल की जगह, शीशों की किरचियां चंद है ,
बदहाली क्यों स्वांग भरती है, ओढ़ नई चद्दर खुशहाली का,
कभी देखा झांककर अंदर, तन में फटी लीरीयां, कितने पैबंद है ।।

लाख पूजें लक्ष्मी दौलत ना जायें मुफ़लिसों के द्वार,
बे–आबरू, रखैल, बांदी है अमीरों की, सच है यार ।
लक्ष्मी चली बैकुण्ठ से ,इस बार जाने को मुफ़लिस के द्वार,
बीच राह लंगवाड़ बैठे, ठड्डे से कर गये पार ।।

1. लंगवाड– मनचले,
2. ठड्डा– जबरन

फितरते

तो अब जाकर अपनी सालों पुरानी फटी बियाज़ में,
'परख' बमुश्किल यह एक ो'र लिखा है ।1।

हवादिस़ के तजुरबात दिये, जिनको दुनिया ने,
क्या खूब, उन्होंने महज़ लफ्ज़ों का ढ़ेर लिखा है।2।

हुस्न ने कभी इश्क़ पर , इश्क़ ने हुस्न पर पलटकर,
बगरज़े–बदल कभी सेर का सवासेर लिखा है ।3।

क़द्दावरों के क़द इस कदर गिरे कि जमाना–बौना आया है,
क़तरा–ए–ख़बर को भी एस.एम.एस. कर उलट–फेर लिखा है।4।

ना कद्र की, ना दाद मिली, नाशुक्रगुजारों से 'परख',
निशां मिटा दिया दिले–बियाज़ से, जो तेरे नाम ोर लिखा है ।5।

मोहब्बत व ोहब्बत असर दिखलाती है आहिस्ता आहिस्ता,
घर मंडी में, दफ्तर कुजड़ों के हाट में पड़ता है ।6।

जिरह–जिबाह ना कि होती सरे इज़लास में उसने यूं,
मंजिल पे पहुँच ज्यूं मुसाफ़िर टैक्सी वाले से लड़ता है ।7।

शिनाख़्त

ुक्र खुदा का, हमने तुम्हे वक्त रहते जान लिया,
सूरत से ही नहीं, सीरत से भी हमने पहचान लिया।

दोस्ती के पाक़ रिश्ते को धोखा ओ –रंज दिया,
जुर्म हमारा था कि बिला तस्दीक अपना मान लिया।

समझाया हमें कि फरेब ओ खुदगर्जी की है दुनियां ,
दिल में जख़्म दिया, ब्रुट्स को अब जान लिया।

संभले हमारे मासूम कदम, इस हादसे के बाद,
चाक–चौबंद होने का अब हमने ठान लिया।

ुक्र खुदा का, हमने तुम्हे वक्त रहते जान लिया,
बर्तन फूटा मिट्टी का,सूरत–ओ–सीरत को पहचान लिया।

परवाज़

दस्तक भी ना दी कभी, दोस्त!
ना तुमने दी मुझे आवाज।
जमीं इतनी बुरी ना थी कि
खुले आस्मां में ले ली परवाज।।
काश! कभी तेरी किताबे–ज़िंदगी के
औराक पर किसी ने पत्थर रखा होता।
हमसाथ की रज़ा के नहीं थे तुम मोहताज ,
पारीना तहज़ीब क्यूं भूला आज।।
तरक्की इसां ही करते हैं,
किस्मत खेंचे जिनके हाथ।
ये ौ तो बुरी नहीं है,
छोड़ना नहीं सरजमीं का साथ।।
भूलना मत दोस्त, गिरोगे उतने ही,
जितनी ऊंची भरी उडान।।
आँखें खुले तब देखना,
पाओगे इन बाजूओं के संग मुस्कान।।

नोटः–

1 . औराकः– पन्ने

2 . पारीनाः– प्राचीन

तारीफ़े–मोहब्बत

यूं तो मोहब्बत होती नहीं किसी से,
होती है तो ताज़िन्दगी निबाह होती है।।1।।
यूं तो नफ़रत होती नहीं किसी से,
होती है तो महज़ गाह–गाह होती है।।2।।
बेदर्द पत्थर हो जब दिल कोई,
चाहत हमारी चिरागे़–राह होती है।।3।।
अजनबी दिल से कैसे कोई रिश्ता,
अपनो से **जो भी हो**, बेपनाह होती है।।4।।
दिल की लगी, हो इक तरफ लगी,
तो महज़ सर्फ़े–निगाहों–आह होती है।।5।।
तुम चाहो हमें, पेश़्तर हम चाहे,
चाहत हमारी मेहरो–माह होती है।।6।।
कोई चश्मदीद हो या फिर ना हो,
मोहब्बत नहीं निकाह़, जो गवाह होती है।।7।।
मोहब्बत नहीं तिज़ारत दिलों की,
ज़ालिम दुनिया की क्यूं निगाह होती है।।8।।
दफनायी है उलफ़त कब्रगाह में,
आशिकों की पाक इबादतगाह होती है।।9।।

इल्ज़ाम

अहद–ए–जवानी में गुल–अन्दाम़ थे,
कितने हंसी खुश़गवार तब अय्याम थे ।

फ़क़त रूसवा किया जिन नाशुक्रों ने,
वे पहले से ही ख़ुद बस्ती में बदनाम थे ।

कौन मुकद्दस रह पाता है इस श़हर में,
कहते हैं का'बे में भी असनाम थे ।

कामग़ार हो सुरमा के कारखाना का,
कैसे कहे ना–वाक़िफ़–ए–अंज़ाम हो काम हो ।

बनवास भुगता बेकसूर, वो भी थे राम,
वफादारी वालिद संग, भुगता अंज़ाम ।

प्यार का सिला दिया, कर सीता को दरब़दर,
'परख' गुनाहग़ार अदम–पता कहां कौन दें इल्ज़ाम ?

नोट–

1.गुल–अन्दाम	**–गुलबदन**	**2.अय्याम**	**–दिन**
3.अंजाम	**–नतीजा**	**4.वालिद**	**–बाप**
5.रूसवा	**–अपमान**	**6.दरबदर**	**–घर निकाला**
7.मुकद्दस	**–पवित्र**	**8.ना–वाक़िफ़**	**–पता ना होना**
9.असनाम	**–बुत**		

मोहब्बत नहीं पाक तो खाक होती है,
ज़िस्मानी चाहत दाग़े–गुनाह होती है।।10।।

खुदगर्जी हो तो मोहब्बत तबाह होती है,
ज़ज्बा कुर्बानी का, मुश्किल में भी राह होती है।।11।।

रमजान के पाक महिने गलबन्दी नमाजगाह होती है,
साल के बचे बक्त, फिर क्यूं आपसी सौतिया डाह होती है।।12।।

जिस से चाहत हो उसी से फिर क्यूंकर नफ़रत करें,
दर्दे–दिल हो तो गले में उसी की तो बांह होती है।।13।।

मक्क़ारी का ठिकाना, दिन चढ़े भी वही ख्वाबगाह होती है
'परख' चार दिन में कुछ करें उनकी वाह–वाह होती है।।14।।

नोटः–

गाह–गाह	:– कभी–कभी
चिरागे–राह	:– रास्ते का प्रकाश
सर्फो–निगाह–आह	:– निजाह आह का व्यय
बेपनाह	:– हद से ज्यादा
पेश़्तर	:– पूर्व
मेहरों–माह	:– सूरज चांद
चश्म़दीद	:– प्रत्यक्षदर्शी
तिज़ारत	:– व्यापार

मुखौटा

नफ़रत हम से, चाहत भी हम से,
बेहद शातिर है या महज़ 'मिराक़' है ।

रिश्ते बेग़ाने रखते है, क्यूं उसूल तर्क़ है,
पकड़े दस्त मजबूत है, चाहते फ़िराक़ है ।

साफ़ छिपते नहीं, साफ दिखते नहीं कभी,
मुखौटों से नीम उज़ाले, करते शिकार है ।

तुम मुंतज़िर मेरी बरबादी के, हम बरबाद
तेरे इंतज़ार में, अपना अपना मज़ाक़ है ।

ठिकाना बताती है कभी युरोप–अमेरिका,
दानिस्तां बोलती नहीं, रहती इराक़ है ।

समझ बैठी है खुद को कोई आफ़ताब,
'परख' मेहताब़ ना सही, मस्ज़िद का चराग़ है ।

ज़िंदा है और ज़िंदादिली भी, इसी शहर में,
'परख' पे–रहमत मौला की या इत्तेफ़ाक है ।

नोट–

1.मिराक़	–पागल	2.तर्क –	छोड़ना
3.फ़िराक़	–जुदाई	4.मज़ाक़–	रूचि
5.दानिस्तां	–जान–बूझकर	6.आफ़ताब–	सूरज
7.मेहताब	–चांद	8.इतेफ़ाक–	संयोग

सच्चाई

झुंठ को बेनकाब होना था,

खुद ही खुद का जवाब होना था,

तेरी जुबां का कुछ कसूर नहीं,

हाँ, मेरी साख को खराब़ होना था ।

निकम्मा हो इसां तो आयेगा,

अबस बैठे नक़्शे फितूर रोज नया था,

फ़ितरत है अक़्ल की अगि़यार,

अच्छी भली नौकरी से वो गया था ।

दिलो–दिमाग़ में गदंगी हो,

इससे अच्छा सादा किताब होना था।

उन्होंने हमारी नाकामियों को ढुंढ लिया,

आखिर सच्चाई को कामयाब होना था !

अपने वतन में रिफ्यूजी

दर्दे दिल से जां पर सदमा होता, छूटना घर है,
बदन तो हिन्द में जरूर है, कहां दिलो सर है।।1।।

तम्बूओं में ताजिंदगी घर लौटने के मुतंजर हैं,
सरकार के मोकूफ़ नहीं, क़यामत पे मुनहसर हैं।।2।।

हमारा दिल महज़ इक चिराग़ है, रोने में जले तो क्या,
गुज़र जाती हैं रातें इसमें बलासे, कोई तो बशर है।।3।।

है दिल में दर्द जरूर, मगर कोई हमदर्द नहीं है पास,
दिल सोज़ अगर कोई नहीं, पर सोज़े ज़िगर है।।4।।

ए दिल, रिफ्यूजी होने के रंज़ो–अलम से ना तंग हो,
ख़ाना खराब, खुश रहो तम्बू में आबाद, यही घर है।।5।।

मुल्क छूटा, मिट्टी–ब़यार छूटी, मेरा घर कश्मीर कहां है,
हम यहां हैं, मेरे हमवतन–हमकसम, क्या तुम्हें यह खब़र है।।6।।

नख़्ले–वफ़ा मादरे–वतन हिन्द से, हमने सदा रखी है,
सद ुक्र तुम्हारा, ज़ेबे तम्बू हैं, ायद ये बारवर है।।7।।

जुनून

कहती है जुनून, जिसको दुनिया,
बिगड़ी हुई शक़्ल, कमअक़्ल होती है ।

फाड़ा था अपना गिरेब़ान महज़ तेरे लिए,
नामुमकि़न तू तो, सी लेने में अक़्ल होती है ।

किस दर्जा तंग हो गया हूँ जुनून में,
लाऊँ कहाँ से रोज फड़वाने गिरेब़ान नए–नए ।

अब के शायद फासला कम रहे ये सोचके,
शीरीं–मजनूं बनने की राह नहीं गए ।

ये किस मुक़ाम में ले आता है, ये जुनून,
फिर भी संभलकर कदम रखता है, दीवाना ।

दामन का चाक आखिर पहुँचा गिरेब़ान के पास,
'परख' पता नहीं किसने भेजा, तेरा पयामेहोश, दीवाना ।

क़ातिल भी छूट जाता है चौदह साल में पूरी कर सज़ा,

हम तो मक़तूल है, फिर कब तक ज़हन्नुम में बसर है।।8।।

'परख' क्या तुम्हें यकीन है, हिन्द में अब भी तुम्हारा कश्मीर है ?

फिर क्यूं हम अपने ही वतन में रिफ्यूजी होकर बेघर है ।।9।।

ाब्दार्थ :–

1.रिफ्यूजी – बाहर से दूसरे घर आश्रय हेतु आये लोग ।

2.मुतंज़र – इंतजार करने वाला

3.मोकूफ़ – निर्भर 4.तंग – छोटा

5.मनहसर – निर्भर 6.क़यामत – प्रलय

7.ख़ाना खराब – घर छूट गया हो जिसका

8.दिल सोज़ – दिल जलाने वाला

9.सद ुक्र – हजार धन्यवाद 10. सोज़े जिगर – जला हुआ दिल

11.नख़्ले वफा – वफा का व क्ष 12. बाखर – फल देने वाला

13 ज़ेबे – ोभित 14. मक़तूल – जिसका क़त्ल हो

(7)

प्यासे को दरिया नज़र नहीं आया,

कई दिन से तेरा, चेहरा नज़र नहीं आया।

तेरे दीदार की भीख मागंते है,

फलक से टूटा, तारा नज़र नहीं आया।

(8)

खामोश थे हम तो मगरूर समझ लिया,

चुप थे हम तो मजबूर समझ लिया,

यही ख़ता है कि इतने करीब थे हम,

फिर भी आपने हमे दूर समझ लिया।

(9)

रिश्ते भी बेहद अजीब होते है,

कुछ बहुत अज़ीज़ तो कुछ काफी क़रीब होते है।

कुछ हम बनाते है अपनी मर्ज़ी से, कुछ खुदग़र्ज़ी से,

कुछ क़िस्मत से नसीब होते है।

(10)

खुशबू की तरह आपके, पास बिखर जाएंगे,
सुकूं बनकर दिल में, उतर जांएगे,
महसूस करने की कोशिश तो कीजिए,
दूर होते हुए भी पास नजर आएंगे।

(11)

वक्त को कौन रोक पाया है,
प्यार करके हर इन्सां बेवफा बन गया है,
कुछ आज भी वफाओं की सेज सजोते हैं,
पर वफा का तोहफा कोई ना लाया है।

(12)

हर क़ब्र ताज़ नहीं होता,
हर चेहरा मुमताज़ नहीं होता,
जानता, यदि तेरा राज़ पहले,
काश ! यह मियां, नख़रेनवाज़ नहीं होता।

(19)

जुबां कह नहीं सकती फसाना दिल का,
शायद नजरों से बात हो जाये।
इस उम्मीद से करते हैं इंतजार रात का,
शायद सपनों में मुलाकात हो जाये।।

(20)

ये दूरियां अजीब सी लगती हैं,
अपनी बात हुए मुद्दत सी लगती है।
जब सोचते हैं जिंदगी के बारे में,
तो आपकी दोस्ती जरूरत सी लगती है।

(21)

हरसफर हमसाथ रहे यूं ही निहारते,
हसरतें चंद अधूरी, ना इश्क़ लड़ाया और ना लड़े कभी ।
मोहब्बत एक दरिया के रहे हम दो साहिल,
हमसाथ रहे व फासले रहे, बिछड़े नहीं ।।

(22)

ग़ज़लें कभी खास,
अब आम हुई,
नशा प्याले में,
अब थैलियों में जाम हुई ।

(23)

ताले टूटते उन मकानों का
जहाँ बेशकिमती मोती हो,
दिल टूटे मुफ़लिस के खाली मकां में,
तकदीर रोती हो ।

(24)

मैंने जो सोचा कभी पाया नहीं,
चाहकर भी मैं उसको भूला पाया नहीं,
चाहता तो था मैं उसको अपनाना,
पर मैंने उसको कभी यह बताया ही नहीं।

(31)

अगर चॉदनी से अंधेरे दूर होते,
तो चॉदनी की चाहत हमें ना होती।
अगर कट सकती अकेले ये जिन्दगी,
तो आपकी जरूरत हमें नहीं होती।।

(32)

जिसने हमको चाहा हम चाह ना सके,
जिसको चाहा कम उसे पा ना सके,
ये समझ लो कि दिल के टूटने का खेल हैं,
किसी का तोड़ा और अपना बचा ना सके।।

(33)

जुंबा से कह नहीं सकते, बजुबां है हम,
इसलिए खुदा से फरियाद करते हैं,
जब भी तुम्हारा दिल जोर से धड़के,
समझ लेना हम दिल से याद करते है।।

खुदक़शी

बेवज़ह बस्ती में आग लगाने वालों,
सोचो, घर है तेरा–मेरा भी उसके अंदर।
बाड़ ने जब लगा दी है आग खेत में,
देखना है, बचकर कहॉ जायें छछूंदर !

'परख' सुनेगा कोई कब तक उनको,
अब नहीं उनकी वो ज़ाजम रह गई है।
गर्ज़परस्ती से झुंठी शिक़वा करने वालों,
वो तो खुद खुदक़शी का पैग़ाम कह गई है।।

जंग

मुझे उठाने को आया है, शैताने–नादां,
जो उठा सके तो अपनी फितरत का जनाज़ा उठा,
किधर से बर्क़ चमकती है, देखो ए–शैतान ,
मै ईमान की ढाल उठाता हूँ तू इल्ज़ाम ताजा उठा।

नोट– बर्क़ – यानि बिजली, जिसके चमकने से पैगम्बर
मूसा साहब को खुदा के दीदार नसीब हुए

(34)

तुम्हारी दोस्ती तुम्हारी वफा ही काफी हैं,
तमाम उम्र ये आसरा ही काफी है,
जहां मिला मिलके मुस्करा देना,
जीने के लिए बस इतना ही काफी है।

(35)

राज दिल का दिल में छुपाते हैं वो,
सामने आते ही नज़र झुकाते हैं वो,
बात करते नहीं या होती नहीं,
पर शुक्र है जब भी मिलते हैं मुस्कराते हैं वो।।

(36)

सितम को हमने बेरूखी समझा,
प्यार को हमने बंदगी समझा,
तुम चाहे हमें जो भी समझाओ,
पर हमने तो तुम्हें अपनी जिन्दगी समझा।।

बिसरी यादें

जवानी में क्या क्या, जुनून आ रहे हैं,
आग़ोश में है उनके, तड़पते जा रहे हैं।

खुदा जाने क्या क्या, ख़्याल आ रहे हैं,
मिल गयी है मंज़िल, तरसते जा रहे हैं।

तबीबों के अब, ये हाल हो रहे हैं,
लगाते मरहम़ वे, ज़हर फैला रहे हैं।

उलफ़त में क्या क्या, मुकाम आ रहे हैं,
ज़ेहन्नुम में हैं और, जीये जा रहे हैं।

वो सूरत है यारों, प्यार–यार अब कैसे,
हमदर्द थे अपने, अग़ियार हो रहे हैं।

एतबार ने दिये हैं, बेशुमार धोके,
जानते भी हैं हम, दानिश्ता खा रहे हैं।

अब 'परख' तेरे दिल से, हाल ये कौन पूछे,
बाबुल की गली–कूचे, खूब याद आ रहे हैं।।

नोटः– अग़ियार – दुश्मन, गैर
दानिश्ता – जानबुझ कर
तबीब – हकीम, चिकित्सक

कीमत

बेकीमत नहीं कोई ौ या इंसा जहां में,
खफ़ीफ़ या बेशकीमत है सब यहां।

बाकीमत है हर ौ या इंसा जहां में।
क्या इस लिए बिकाऊ है सब जहां में ?

देखने का नज़रिया, कैसे कोई बदल जाये ?
बिकाऊ खुद हो तो दीगर कैसे बन जावे ?

रखते उसूल या हो रहमते– जज्बा इंसानी,
खुदा के बंदे बिकते नहीं, बेबदल दे सकते कुर्बानी।

बराबर

धोखा दिया, फरेब किया,
हुक्म उदूली का ताबेदार,
फिर भी क्यों समझता,
इसां अपने को उसका खास मुख़त्यार ?

कायनात तमाम में ऐसी करोड़ों,
दुनियां, अनगिनत जीव–जानवर,
सब खुदा की खुदाई,
उसे सबसे है प्यार बराबर।

हमराही

वो तारा, जो मेरे बचपन का साथी है,
जहाँ–जहाँ जाता हूँ, हमेशा साथ चलता है ।

सफर में मिला राहग़ीर यादें छोड़ गया,
पथराया चेहरा उसका, दिल मसलता है ।
अब़सार में आंसू, दर तक आकर थमे,
बसरा का मोती ठहरा, सीप में पलता है ।
वो तारा, जो मेरे बचपन का साथी है,
जहाँ–जहाँ जाता हूँ, हमेशा साथ चलता है ।

खूब दूर साथ चले, जितना नसीब़ था,
आखिर वो मुक़ाम आया, जो रास्ता बदलता है ।
आओ रोएं एक बार गले मिलकर दोनों,
ना जाने क्यूं ये नादां दिल फिर मचलता है ।
वो तारा, जो मेरे बचपन का साथी है,
जहाँ–जहाँ जाता हूँ, हमेशा साथ चलता है ।

हर किसी को नसीब नहीं होता ये आसां रास्ता,
कौन चलना चाहे अब पैदल, दिल को खलता है ।
लम्बे यादगार सफर के बाद मुश्क़िल है बिछड़ना,
बुझ गये दिल के दीये, 'परख– किससे अब ये बहलता है ।
वो तारा, जो मेरे बचपन का साथी है,
जहाँ–जहाँ जाता हूँ, हमेशा साथ चलता है ।

बाल मेला

क्या गजब का बाल मेला है,
अजीब रंग–रूप व झमेला है ।

हर तरफ देखो, पहने कपडे रंगीले हैं
नन्हें प्यारे बच्चे, होते कितने सजीले हैं ।
बोली तोतली पर, कितने अक्लमें कटीले हैं ,
हर पसन्द की चीज, पाने जिद्द में हठीले हैं ।।
क्या गजब का बाल मेला है,
अजीब रंग–रूप व झमेला है ।

बारी बारी सब स्कूल में लगा मेला है,
कहीं खिलौने, कहीं पकवान का ठेला है,
कही टिकिया –पूचके, कहीं अमरूद केला है,
कोई साथी के संग, तो कोई महज अकेला है ।।
क्या गजब का बाल मेला है,
अजीब रंग–रूप व झमेला है ।

कहीं घूम चकरी, कहीं डोलर झुले है,
कहीं जादू, कहीं करतब, कितने नुकीले हैं ।
कहीं किताबें, कहीं कपड़े बिकते लाल –पीले हैं,
कहीं बड़े–पकौडे, कहीं चाट–चीले हैं ।।
क्या गजब का बाल मेला है,
अजीब रंग–रूप व झमेला है ।

अफसोस, क्यूं ये साल में एक बार है,
बच्चे खुश रहे, यह वक्त की दरकार है ।
रोज लगते, होती जो बच्चों की सरकार है,
बाल मेले मन हरते, लाते खुशी भरमार है ।।
क्या गजब का बाल मेला है,
अजीब रंग–रूप व झमेला है ।

जाड़ा

मंगसिर गया, देखो! पौ ा मास आया है।
घर–बाहर, मीठा मीठा जाड़ा संग लाया है।
सूरज जल्दी ाम ढ़ले ढ़ल जाता है।
रात बड़ी हुई, तापमान भी जम जाता है।
थर थर धूजता है, अब सारा बदन।
बजती बत्तीसी, हाथ–पांव करते कीर्तन।
मंगसिर गया, देखो! पौ ा मास आया है।
घर–बाहर, मीठा मीठा जाड़ा संग लाया है।
स्वेटर–रजाई, टोपी–गुलबंद बाहर आते हैं।
फिर भी बदन अंदर से कंपकंपाते है।
मूंगफली–गजक और दूध–फीणी खाते हैं।
सुबह की कच्ची धूप से कुछ सुख पाते हैं।
मंगसिर गया, देखो! पौ ा मास आया है।
घर–बाहर, मीठा मीठा जाड़ा संग लाया है।
सांझ पड़े बाजार में सांय सांय सन्नाटा छा जाता है।
फिर तो सूरज चढ़े ही बिस्तर छूट पाता है।
वक्त स्कूल, अस्पताल, बाजार के बदल जाते हैं।
दाल–हलवे के संग पौ ा बड़े तले जाते हैं।
मंगसिर गया, देखो! पौ ा मास आया है।
घर–बाहर, मीठा मीठा जाड़ा संग लाया है।
रात में सोने का खूब आनन्द लाया है।
शाम अंगीठी तो रात हीटर भाया है।
गोठ–पिकनिक, ाादी का मौसम आया है।
नये साल में बाहर घूमने का मौका लाया है।
मंगसिर गया, देखो! पौ ा मास आया है।
घर–बाहर, मीठा मीठा जाड़ा संग लाया है।

इज़ाजतनामा

इब्तदाई इश्क था, बचपन से जवानी तक आने दे दी।
कोई नहीं ख्वाबों में, उसे आने की इज़ाजत दे दी,
..... इज़ाजत दे दी ।
उसने कहा वो चाहने लगी, किसी गैर अनजान को।
पलकों में पानी रोककर, उसे जाने की इज़ाजत दे दी,
..... इज़ाजत दे दी ।
इब्तदाई इश्क था, बचपन से जवानी तक आने दे दी।
कोई नहीं ख्वाबों में, उसे आने की इज़ाजत दे दी,
..... इज़ाजत दे दी ।

पैदा हमसाया, हमकोख, एक साया में पले थे।
रंजो–अलम हो या खुशियां, बांटने की इज़ाजत दे दी,
..... इज़ाजत दे दी ।

हालात माली बदले, धंधे में इज़ाफा पे इज़ाफा हुआ था।
भाई ने किनारा करने की ठानी, जुदा बसने की इज़ाजत दे दी,
..... इज़ाजत दे दी ।

इब्तदाई इश्क था, बचपन से जवानी तक आने दे दी।
कोई नहीं ख़्वाबों में, उसे आने की इज़ाजत दे दी,
..... इज़ाजत दे दी ।

अंगुली पकड़ चलना सिखाया, बेटे को सर पे बैठाया था।
दौलत की चाह में गया विदेश, जाने की इज़ाजत दे दी,
..... इज़ाजत दे दी ।

मादरे वतन खातिर ाहीद हुआ, वो दोस्त मेरा याद आया।
कांधे पे मेरे जनाज़ा उसका, जाने की इज़ाजत दे दी,
..... इज़ाजत दे दी ।

इब्तदाई इश्क था, बचपन से जवानी तक आने दे दी।
कोई नहीं ख्वाबों में, उसे आने की इज़ाजत दे दी,
..... इज़ाजत दे दी ।

'परख' हूणों की बस्ती में ख़ामख़्वाह जान दे दी।
नोच ले गये गोश्त गिद्ध, ले जाने की इज़ाजत दे दी,
..... इज़ाजत दे दी ।

ये कोई सतजुग नहीं कि तुम बनो दधीचि, शिवि।
''हूण'' आये लेने रूह, तुमने ले जाने की इज़ाजत दे दी।।
..... इज़ाजत दे दी ।

इब्तदाई इश्क था, बचपन से जवानी तक आने दे दी।
कोई नहीं ख्वाबों में, उसे आने की इज़ाजत दे दी,
..... इज़ाजत दे दी ।

शुक्राना

क़द्रदान, तुम्हारा शुक्रिया !
होने दिया हमें,तुम्हारे मुख़ातिब,
वर्ना शायर ना होता ख़ाकसार,
जो महज़ चंद लफ़्ज़ो का क़ातिब !

नजर करते हैं नजराना, नज्मों का जाम,
नाजुक़ जज़्बाती दिल के अहसास आम,
आवें 'एहसास के दाने' का हर दाना काम,
महफ़ूज रहे वतन, खुशहाल हो आवाम !

एहसानमंद–
– शशि कुमार पारीक 'परख'